International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.2 Nov-Dec 2023

उद्यमी की नवप्रवर्तक के रूप में भूमिका

डॉ ललिता परिहार
एसोसिएट प्रोफेसर, व्यावसायिक प्रशासन विभाग वाणिज्य संकाय
राजकीय कन्या महाविद्यालय, मगरा पूंजला जोधपुर
Corresponding Author – डॉ ललिता परिहार
DOI-10.5281/zenodo.14676823

शोध सार

किसी भी व्यवसाय में जोखिम वहन करना, नवसृजन करना, अनिश्चितताओं का सामना करना और साहसिक कार्य करना उद्यमिता कहलाता है ।जिस व्यक्ति में उद्यमिता की भावना होती है वह उद्यमी कहलाता है उद्यमी अपने जीवन और व्यवसाय में जोखिम नवप्रवर्तन,साहस, उत्कृष्ट नेतृत्व, उपलब्धि तथा परिवर्तन के लिए सदेव कार्य करता रहता है ।उद्यमिता स्वरोजगार का एक महत्वपूर्ण साधन है उद्यमी राष्ट्र एवं मानव मात्र की कल्पनाओं को साकार करने वाला समाज के वातावरण व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के ढांचे में बदलाव लाता है। नवप्रवर्तन एक एक नया सृजनात्मक विचार है जिसका प्रयोग उद्यमी अपने व्यवसाय मे उत्पादन प्रक्रिया में, सेवा को परिवर्तित करने अथवा उसमें सुधार करने के लिए करता है। नवप्रवर्तन किसी भी सृजनात्मक विचार को व्यवहार में लागू करके उसे किसी उपयोगी उत्पादन सेवा अथवा कार्य में रूपांतरित करना है । उद्यमी सदैव नई वस्तुओं का सृजन करते हैं वह मूल्य में परिवर्तन करते हैं तथा उन्हें नया रूप देते हैं उद्यमी नवप्रवर्तन के माध्यम से व्यूरचनात्मक निर्णय लेते हैं नए अवसर एवं तकनीक का प्रयोग करके समाज व उपभोक्ताओं को उपयोग की वस्तुएं प्रदान करते हैं। उद्योगों में शोध व अनुसन्धान को प्रोत्साहित करते हैं तथा समाज में धन का सृजन करते हैं। नव प्रवर्तन परिवर्तन के लिए संगठित खोज है अवसरों के उपयोग का एक व्यवस्थित विश्लेषण है तथा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने के लिए एक साधन है। नवप्रवर्तन के बिना कोई उद्यमी सफल व्यवसायी नहीं बन सकता है।

वर्तमान में ग्राहक को नए उत्पाद, नई डिजाइन, अच्छी किस्म व नई जीवन शैली और फैशन युक्त वस्तुएं चाहिए जोकि नवप्रवर्तन द्वारा ही संभव है। उपभोक्ता संतुष्टि हेतु उद्योगों में नव प्रवर्तन आवश्यक हो गया है वर्तमान में प्रत्येक राष्ट्र में सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक विकास की बढ़ती हुई आकांक्षाओं के कारण और नई तकनीकों की खोज हेतु उद्यमी द्वारा नवप्रवर्तन आवश्यक है। उद्यमिता समाज में नए रोजगार नई वस्तुएं नए व्यवसाय व जीवन के नए मूल्य पर नए स्तर को विकसित करती है उद्यमी शोध एवं अनुसंधान के द्वारा समाज में नव प्रवर्तन लाते हैं उद्यमी नव प्रवर्तक का कार्य करते हुए सदैव परिवर्तन की खोज करता है और उसे पर कार्य करते हुए अवसर के रूप में उसका लाभ उठाता है उद्यमी नव प्रवर्तन द्वारा नए-नए परिवर्तन चुनौतियां एवं सुधारो का एक अवसर के रूप में प्रयोग करता है किसी भी राष्ट्र की आर्थिक सामाजिक मूल्यों का सृजनकर्ता परिवर्तनों का संवाहक औद्योगिक क्रियो का प्रेरक उद्यमी होता है प्रस्तुत शोध कार्य अवलोकन साक्षात्कार प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित होगा ।प्रस्तुत शोध मे यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में उद्यमी की नवप्रवर्तक के रुप मे महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

परिचय

नवप्रवर्तन एक विशिष्ट प्रकार का परिवर्तन है नवप्रवर्तन किसी सृजनात्मक विचार, उपकरण ,साधन ,तकनीक या ज्ञान का उपयोग कर उसे व्यवहार में लागू कर किसी उपयोगी उत्पादन सेवा अथवा कार्य में रूपांतरित करना है। नए उत्पाद नई उत्पादन प्रक्रिया, नई कच्ची सामग्री, सामग्री के नए स्रोत, नई बाजार अथवा किसी नए संगठन प्रणाली का विकास करना नवप्रवर्तन के ही विभिन्न रूप है। नव प्रवर्तन एक ऐसा गतिशील परिवर्तन है जो उत्पादन के नए संयोजनों को प्रारंभ करने के अनुरूप गठित होता है नवप्रवर्तन एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा उद्यमी धन उत्पन्न करने वाले नए संसाधनों का सृजन करता है तथा अपने विद्यमान संसाधनों की धन उत्पन्न करने की क्षमता को बढ़ा देता है। उद्यमी नवप्रवर्तन के माध्यम से व्यूरचनात्मक निर्णय लेते हैं नए अवसरों एवं प्रौद्योगिकी का दोहन करके समाज व उपभोक्ताओं को उपयोगी वस्तुएं प्रदान करते हैं वह नव प्रवर्तन द्वारा उद्योगों में शोध व

प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं और समाज में धन का सृजन करते हैं उन्हें सृजनात्मकता के प्रवर्तक भी कहा जाता है नवप्रवर्तन के बिना कोई उद्यमी सफल व्यवसाय की श्रेणी में शामिल नहीं हो सकता है।

किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में व्यावसायिक उद्यमिता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उद्यमिता के कारण ही देश में नए उद्योग, वस्तुएं ,रोजगार, आय व धन संपदा का निर्माण संभव होता है राष्ट्र के संसाधनों को उत्पादक कार्यों में लगाना नवीन तकनीक नए कार्यों एवं साहसिक निर्णय लेना ,उपयोगिताओं का सृजन करना उद्यमी पर ही निर्भर है।। उद्यमी किसी भी अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार करता है आर्थिक स्थिति औद्योगिक चेतना एवं सामाजिक नव प्रवर्तन को उत्प्रेरित करता है।उद्यमी का अर्थ समझने से पूर्व हमें उद्यमिता को समझना होगा उद्यमिता किसी भी कार्य को करने में उसमें निहित जोखिमों को वहन करने, लाभप्रद साहसिक निर्णय लेने ,सामाजिक नव प्रवर्तन करने और गतिशील नेतृत्व प्रदान करने की योग्यता है उद्यमिता वह प्रक्रिया या योग्यता है जिसके कारण कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह विभिन्न जोखिम पूर्ण दशाओं में अवसरों की खोज कर रचनात्मक नवाचार करता है तथा नए संगठन की स्थापना एवं संचालन कर किसी नवीन उत्पाद या सेवा को प्रस्तुत करने की जोखिम उठाता है। उद्यमिता नवाचारों के द्वारा आवश्यक संसाधनों को प्राप्त कर किसी संगठन या व्यवसाय का निर्माण एवं संचालन कर समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर संतुष्टि का लाभ अर्जित करने की योग्यता है।

उद्यमी वह है जिसमें उद्यमिता की योग्यता होती हैं। वह विभिन्न व्यावसायिक अवसरों की खोज कर जोखिम वहन करते हुए व्यावसायिक चुनौतियां का सामना करता है और नए उपक्रम को प्रारंभ करता है ।वह आवश्यक संसाधनों जैसे पूंजी, श्रम, कच्चा माल यंत्र तकनीक को एकत्रित कर व्यवसाय की क्रियाओं का प्रबंध एवं नियंत्रण करता है। एक विकासशील अर्थव्यवस्था में उद्यमी वह व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह है जो किसी व्यवसाय की स्थापना की कल्पना करता है और अपनी कल्पना को पूरा करता है। वर्तमान में उद्यमी का कार्य उपक्रम के स्थापना के साथ साथ नवप्रवर्तन करना है इसी प्रकार एक विकसित अर्थव्यवस्था में उद्यमी एक नवप्रवर्तक है जो नवीन वस्तू नवीन तकनीक नए यंत्र , नई प्रणाली व नए बाजारों की खोज करके व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाता है। वह एक नवप्रवर्तक एवं सामाजिक नायक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। माइक्रोसॉफ्ट के प्रवर्तक बिल गेट्स,फेसबुक के प्रवर्तक मार्क जकरबर्ग,विश्व , नवप्रवर्तक है भारत मे इन्फोसिस के प्रवर्तक नारायण मूर्ति विप्रो के प्रवर्तक प्रेमजी अजीज, रिलायंस लिमिटेड के मुकेश अंबानी अनिल अंबानी टेलीकॉम एयरटेल के सुनील भारती मित्तल आदित्य बिरला ग्रुप के कुमार मंगलम बिड़ला प्रोड्यूसर डायरेक्टर करण जौहर और एकता कपूर पेटीएम के सुनील वर्मा आदिये वो उद्यमी हैं जिन्होंने नवप्रवर्तन किया है।

शोध उद्देश्य

1- उद्यमशील व्यवहार का अध्ययन करना ।
2- किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में उद्यमी की नवप्रवर्तक के रूप में भूमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली,अवलोकन साक्षात्कार और द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण कर किसी भी राष्ट्र में उद्यमी की नवप्रवर्तक के रूप में भूमिका का अध्ययन किया जाएगा।

उद्यमीय व्यवहार के लक्षण

उद्यमी एक विशिष्ट व्यक्ति होता है जिसका व्यवहार एक सामान्य व्यक्ति से भिन्न होता है उद्यमी के व्यवहार के प्रमुख लक्षण निम्न है।

उच्च उपलब्धि की आकांक्षा

उद्यमियों का व्यवहार कुछ विशेष प्रकार की आवश्यकता से प्रेरित होता है यह सामाजिक मानसिक तथा आत्म विकास से संबंधित हो सकती है। उद्यमी के व्यवहार पर उच्च उपलब्धि की आकांक्षा का अधिक प्रभाव होता है। उद्यमी उच्च उपलब्धि की आकांक्षा से प्रेरित होकर अपना कार्य एवं व्यवहार करता है उच्च उपलब्धि की आकांक्षा से तात्पर्य समाज में उच्च स्थान या सम्मान प्राप्त करना,कोई सफल उपलब्धि का अपने नाम करना या समाज सेवा करना होता है।

कर्मशील व्यवहार

उद्यमी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने आसपास के वातावरण को अपने हित में प्रभावित करता हैं ।वह परिस्थितियों को अपने प्रयासों एवं कार्यों से अपने अनुकूल बनाने हेतु कार्य एवं व्यवहार करता हैं वह अपना भाग्य स्वयं लिखने एवं बनाने में विश्वास करता हैं और इस दिशा में कार्य एवं व्यवहार करता हैं। उद्यमी ऐसी स्थिति को पसंद नहीं करते हैं जो पूर्णतया देव योग पर निर्भर करती है उद्यमी अपने प्रयासों से घटनाओं व क्रियो को प्रभावित करने में विश्वास करते हैं। उद्यमी पर्याप्त सूचनाओं तथ्यों आंकड़ों विश्लेषणकर पूर्वानुमान एवं वैज्ञानिक विधियों के आधार पर विवेकपूर्ण निर्णय लेता है।

संयमित जोखिम लेने की प्रवृत्ति

उद्यमी चुनौती को पसंद करते हैं किंतु वे अपने ऐसे कार्य अथवा निर्णय में चुनौती को अनुभव करते हैं जिसमें सफलता की संभावना होती है जहां उन्हें अपने प्रयासों से सफलता मिलने की संभावना होती है वहीं पर वह जोखिम वहन करना पसंद करते हैं और असंभव कार्यों में समय व ऊर्जा का अपव्यय नहीं करते हैं उद्यमी बिना सोचे समझे कोई जोखिम बहन नहीं करते हैं वह विवेकपूर्ण आधार पर निर्णय लेकर जोखिम वहन करते हैं उद्यमी बाजार सूचनाओं उपलब्ध संसाधनों एवं सफलता के मापदंड के अनुकूल विवेकपूर्ण निर्णय लेकर जोखिम वहन करते हैं। उद्यमी चुनौतियों को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है वह कैसी भी सभी परिस्थितियों में लाभप्रद अवसरों की खोज

जारी रखता है उद्यमी स्थिति का गहन विश्लेषण करके उसके नकारात्मक पहलुओं को भी लाभ के अवसरों में बदलने का प्रयास करता है वह प्रत्येक स्थिति से उत्पन्न होने वाली चुनौतियां कठिनाइयां संकटों आदि का सामना करने की पूर्ण व्युहरचना बनाता है।

सृजनात्मक एवं नवाचारी

सृजनात्मक एवं नवाचार सफल उद्योगों के व्यवहार का आधार है उद्यमी स्वभाव से सृजनशील और नवाचारी होते हैं।उद्यमी दूर दृष्टि एवं अंतर्दृष्टि तथा कल्पना शक्ति का धनी व्यक्ति होता है वह दूरदर्शिता पूर्ण व्यवहार करता है वह अच्छे और नए विचारों की कल्पना करके नव प्रवर्तन करता है वह सदैव नए उत्पादों को विकसित करने नई उत्पादन विधियों एवं तकनीक का विकास करने नई बाजार क्षेत्र में प्रवेश करता है नवीन संगठनों की स्थापना करने नए प्रकार के संसाधनों की खोज करने तथा विद्यमान संसाधनों के नए स्रोतों को खोजने के प्रति जागरूक रहता है और अपना कार्य व व्यवहार करता है वह सदैव चिंतनशील होता है ग्राहकों के विचारों को जानता है और ग्राहकों को नई-नई वस्तुएं उपलब्ध कराता है वह सदैव परिवर्तन एवं नवीनता में विश्वास करता है।उद्यमी स्वयं उत्तरदायित्व लेना पसंद करते हैं और नए विचारों नई योजनाओं और नए प्रयोगों के आधार पर अपने प्रतिद्वंदी से आगे बढ़ने का लक्ष्य रखते हैं।

आर्थिक अवसर की खोज

उद्यमी सदैव अपने आसपास के वातावरण का विश्लेषण करते हुए आर्थिक अवसरों की खोज करता है वह व्यावसायिक अवसरों की खोज करते हुए चुनौतियों को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है वह बाजार की स्थिति का अध्ययन करते हुए विभिन्न व्यवसाय में उत्पाद, यंत्र प्रक्रिया , टेक्नोलॉजी, वित्त आदि में लाभदायकता की संभावना पर बहुत अधिक ध्यान देता है वह अल्प संसाधनों से धीरे-धीरे अपने ज्ञान पहलपन कौशल एवं प्रवीणता से एक बड़ा व्यवसाय की स्थापना करता है ।उसके व्यवहार में आर्थिक प्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं वह समस्त संसाधनों का पूर्ण भुगतान करने के बाद बची हुई आय को स्वयं उपभोग करता है। उद्यमी सफलता की आशा से कार्य करते हैं उनमें आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, गतिशीलता व ऊर्जा के के साथ कार्य करता हैं उद्यमी की प्रतिस्पर्धा उसके स्वयं के द्वारा तय किए लक्ष्यों के विरुद्ध होती है ना कि दूसरों के द्वारा निश्चित किए गए लक्ष्यों के विरुद्ध, यही उद्यमी के विकास का महत्वपूर्ण ढंग होता है।

नवप्रवर्तन के अवसर की खोज

उद्यमी निरंतर नवप्रवर्तन के अवसरों की खोज करता है वह समस्याओं को अवसर में बदलता है उद्यमी व्यवस्थित नव परिवर्तन के लिए उद्देश्य पूर्ण एवं संगठित खोज करता है तथा अवसरों का व्यवस्थित विश्लेषण करता है

उद्यमी एक नव प्रवर्तक के रूप में

किसी भी राष्ट्र में उद्यमी सदैव अवसर की खोज करता है और जोखिम बहन करते हुए चुनौतियों को स्वीकार करते हुए नव प्रवर्तन करते हुए व्यावसायिक निर्णय लेता है। किसी भी राष्ट्र के उपलब्ध संसाधनों का दोहन करने के लिए एवं सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए या नई तकनीक में परिवर्तन के लिए इस डिजिटल युग में नव प्रवर्तन आवश्यक है ।उद्यमी ही वह व्यक्ति है जो नए निर्णय लेता है, नवाचार करता है नए विचार लाता और उन विचारों को वास्तविक रूप से लागू करता है। किसी भी राष्ट्र में उद्यमी का नव प्रवर्तक के रूप में निम्न कारण से उसका महत्व है।

नवप्रवर्तन उद्यमी द्वारा कुछ नया करने की योग्यता नए उत्पाद नई डिजाइन उत्पादन की नई विधि नई गुणवत्ता नई तकनीक अथवा नई प्रबंधन व्यवस्था का उपयोग करना नवप्रवर्तन है जिससे उद्यमी अपने लाभों में वृद्धि कर सकता है नवप्रवर्तन की भावना उद्यमी की प्रकृति में निहित होती है ।उद्यमी सदैव पुरानी परंपराओं और प्रक्रियाओं का विरोध करता है। वह नई वस्तु को लाता है उद्यमी नवप्रवर्तक के रूप में जोखिम को वहन करता है नव प्रवर्तन हेतु उद्यमी नए विचारों की कल्पना करता है उनका प्रयोग करता है और उनका वाणिज्यिक उपयोग करता है तभी वह नव प्रवर्तन में सफल होता है ।नवप्रवर्तन हेतु उद्यमी वास्तविक जोखिम अर्थात जब उद्यमी नव प्रवर्तन के कार्य में असफल हो जाता है और दूसरी भावात्मक जोखिम अर्थात जब उद्यमी नव प्रवर्तन के परिणाम के बारे में निश्चित नहीं होता है दोनो प्रकार की जोख़िम को वहन करता हैं।नवप्रवर्तन से ग्राहकों की रुचिया और प्राथमिकताएं भी बदलती है नव प्रवर्तन के लिए दीर्घकालीन वित्तीय विनियोग की आवश्यकता होती है ।किसी भी राष्ट्र में उद्यमी स्वास्थ्य , वित्त ,शिक्षा ,तकनीकी ,परिवहन ,सामाजिक ,आर्थिक क्षेत्र में नवपरिवर्तन करता है ।जब उद्यमी नव प्रवर्तन करता है तो वह किसी भी राष्ट्र की आर्थिक सामाजिक राजनीतिक स्थिति को प्रभावित करता है

संसाधनों का कुशलतम प्रयोग

किसी भी राष्ट्र के संसाधनों का कुशलतम उपयोग उद्यमी अपने नए विचारों को लागू करके करता है वह उपलब्ध संसाधनों से भी अवसर की खोज करता है नव प्रवर्तन करता है और नई वस्तु उपलब्ध कराता है
अच्छी किस्म वह कम लागत के उत्पाद को उपलब्ध कराना उद्यमी नई तकनीक एवं बाजार संबंधी ज्ञान का उपयोग करता है वह नवाचार द्वारा उत्पादों के गुण एवं किस्सों में सुधार करता है और नए उत्पाद का निर्माण करता है वह नवाचार द्वारा उत्पादन तकनीक विपणन तकनीक एवं विभिन्न लगता में कमी लाता है

ग्राहक संतुष्टि

नवप्रवर्तन द्वारा ग्राहक को कम लागत पर अच्छी किस्म का उत्पाद उपलब्ध होता है जिससे वह उसे उत्पादन के स्थाई ग्राहक बन जाते हैं और उसे उत्पादन के प्रति उनकी

निष्ठा बन जाती है एक उद्यमी के लिए ग्राहक संतुष्टि बहुत महत्वपूर्ण है नए उत्पाद, नई डिजाइन, नई गुणवत्ता से युक्त वस्तुएं ग्राहकों की पहली पसंद बन रही है ग्राहकों की बदलती हुई आवश्यकता है इच्छाएं नई अपेक्षाएं, नई जीवन शैली व पसंद के कारण उद्योगों में नव प्रवर्तन अत्यंत आवश्यक हो गया है ग्राहक संतुष्ट रहना ही आवश्यक नहीं है बल्कि ग्राहकों को सदैव बिन नहीं उत्कृष्ट एवं बदलते हुए जमाने के अनुसार वस्तुएं उपलब्ध होनी वह उद्यमी द्वारा ही उद्यमी नव प्रवर्तन द्वारा ही उपलब्ध कराता है यदि कोई उद्यमी नव प्रवर्तन नहीं कर सकता तो वह कभी सफल नहीं हो सकता है।

व्युहरचनात्मक शक्ति और प्रतिस्पर्धा क्षमता में सुधार

उद्यमी द्वारा नवप्रवर्तन से व्यूहरचनात्मक शक्ति प्राप्त होती है जिससे वह उपक्रम के दीर्घकालीन विकास विस्तार एवं प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने संबंधी निर्णय लेता है यह नव प्रवर्तन उद्यमी का प्रतीक स्पर्धात्मक हथियार है नव प्रवर्तन व्यवसाय का आधारभूत कार्य है उद्यमी नव परावर्तन के द्वारा ही प्रतिस्पर्धा पर विजय प्राप्त करता है और उपक्रम में प्रतिस्पर्धा की शक्ति उत्पन्न करके उसे उद्यमिय ऊर्जा में परिवर्तन करता है नवाचार द्वारा उद्यमी अपनी संस्था तथा अपने उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में भ सुधार करता है जिससे संस्था की ख्याति में वृद्धि होती है । उपक्रम की सफलता एवं अस्तित्व के लिए नव प्रवर्तन आवश्यक है नवप्रवर्तन द्वारा ही कर्मचारियों को प्रेरणा मिलती है नव प्रवर्तनकारी विचारों से कर्मचारी जब सहभागिता निभाते हैं तो उन्हें पुरस्कार व प्रशंसा भी मिलती है

नई तकनीक नव प्रवर्तन में सहायक

विज्ञान के नए आविष्कारों प्राकृतिक घटनाओं नई सूचनाओं प्रौद्योगिकी के विस्तार जैसे ए आई का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग के कारण उद्यमी के लिए नव प्रवर्तन करना आवश्यक हो गया है उद्यमी विज्ञान की इन नई-नई खोज के आधार पर नए-नए उत्पादों की रचना करके उनका वाणिज्य करण करता है

सामाजिक नवप्रवर्तन

उद्यमी अपने व्यवसाय को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही कार्य करता है वह समाज की आवश्यकताओं का अध्ययन करके नव प्रवर्तन द्वारा समाज की समस्याओं का समाधान करता है और नए-नए उद्योगों की स्थापना करता है तकनीकी नव प्रवर्तन और सामाजिक नव प्रवर्तन उद्यमी द्वारा ही किए जाते हैं एक उद्यमी समाज में आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से अन्य क्षेत्रों में नव प्रवर्तन करता है वह व्यावसायिक क्षेत्र के अतिरिक्त वातावरण, स्वास्थ्य ,शिक्षा, ग्रामीण विकास ,सामाजिक पर्यावरण, शहरीकरण जनकल्याण आदि की समस्याओं एवं आवश्यकताओं का अध्ययन करके उसमें नव प्रवर्तन का कार्य करता है वह व्यक्तियों के व्यवहार आदतें रुचिया , प्राथमिकताएं आदि में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दृष्टि से कार्य करता है उद्यमी सामाजिक पर्यावरण में बदलाव लाने तथा नए सामाजिक मूल्यों का सृजन करने के प्राथमिक दायित्व को वहां करताहै।

नवप्रवर्तक उद्यमी के समक्ष आने वाली चुनौतियां

नव प्रवर्तन हेतु निवेश की प्रेरणा का अभाव

जब किसी उद्यमी का बाजार पर एकाधिकार होता है तो वह नवाचार नहीं करना चाहता क्योंकि इससे उसका बाजार में एकाधिकार समाप्त हो जाता है उद्यमी नवाचार में निवेश तभी करना चाहेगा जब प्रतिस्पर्धा बढ़ जाए और उसका विक्रय या लाभ कम हो जाए ।

संसाधनों की कमी

कभी-कभी उद्यमी के पास नया विचार भी होता है अवसर भी होता है वह जोखिम भी बहन करना चाहता है लेकिन उसके पास धन एवं समय की कमी होती है धन के बिना भौतिक संसाधन प्राप्त नहीं किया जा सकते और ना ही उच्च बौद्धिक स्तर के नवाचार करने वाले व्यक्तियों की सेवाएं ही प्राप्त की जा सकती है अतः संसाधनों की कमी नवाचार में प्रमुख बड़ा है

संकट का भय

कभी-कभी संस्था या उद्यमी नव प्रवर्तन इसलिए नहीं करते हैं या अपनाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा करने से वह संकट में पड़ सकते हैं यदि नवाचार उत्पाद के कारण विद्यमान उत्पाद बिल्कुल भिन्न या प्रकृति विरोधी हुआ तो संस्था संकट में पड़ सकती है इसी भय के कारण संस्था या उद्यमी नवाचार नहीं करते हैं।

विद्यमान व्यवसाय के बंद होने का भय

कभी-कभी कोई संस्था या उद्यमी जो प्रवर्तन इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें भय होता है कि विद्यमान संस्था या व्यवसाय के उत्पादन को बंद न करना पड़े ।यदि विद्यमान व्यवसाय की उत्पादन तकनीक की जगह नई तकनीक से कार्य किया तो हो सकता है वह आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक ना हो। जो की नवप्रवर्तन में प्रमुख चुनौती है जैसे यदि कोई संस्था अपनी विद्युत उत्पादन इकाई को अणु शक्ति के स्थान पर गैस से चलने का नव प्रवर्तन करना चाहती है तो उसे अणु शक्ति पर आधारित संयंत्र को बंद करना पड़ेगा जिससे भारी संकट उत्पन हो सकता है ।

योग्य व्यक्तियों की कमी

कभी-कभी उद्यमी या संस्था नव प्रवर्तन इसलिए भी नहीं करते हैं कि उन्हें लगता है कि व्यवसाय में कार्यरत कर्मचारी नई तकनीक या नवाचार का विरोध करेंगे और यदि नई तकनीक से कार्य किया जाता है तो उन्हें उसे तकनीक का प्रयोग करने प्रयोग करना नहीं आता है इससे विद्यमान कर्मचारियों की क्षमताओं का उपयोग नहीं होने का भी भय रहता है और योग्य कर्मचारियों की प्राप्ति का भी भय रहता है

प्रबंधकों की विचारधारा

प्रबंधकों की विचारधारा आधुनिक या नव प्रवर्तन विरोधी भी हो सकती है जिससे प्रबंधक नवाचार को अपने में कठिनाई या बाधा उत्पन्न करते हैं प्रबंधकों का नव प्रवर्तन

के प्रति भय होता है कि नव प्रवर्तन के कारण उनकी सत्ता में कमी आ जाएगी प्रबंधक विद्यमान उत्पाद तकनीकी प्रक्रियाओं को लागू करने में ही संतुष्ट रहते हैं यह सोच नव परिवर्तन में बाधक होता है।

नव प्रवर्तन हेतु सुझाव

प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करना

प्रत्येक क्षेत्र में कुछ प्राकृतिक संसाधन होते हैं जैसे कई खनिज पदार्थ होते हैं तो कहीं रेगिस्तान होता है राजस्थान के उद्यमियों ने रेगिस्तान में तेल खोज, पहाड़ी इलाकों में संगमरमर पत्थर को खोज और उनके व्यावसायिक प्रयोग किया है।सामग्री का पुनः उपयोग कर नवप्रवर्तन द्वारा ही किया जा रहा है।

क्षेत्र विशेष की विशेष क्षमताओं के अवसर के आधार पर नवप्रवर्तन किसी क्षेत्र में पढ़े लिखे लोग ज्यादा होते हैं कहीं पर शारीरिक रूप से बलवान लोग होते हैं कहीं पर तकनीकी ज्ञान वाले व्यक्ति हो सकते हैं कहीं पर हस्तकला नृत्य कला और संगीत कला में दक्ष व्यक्ति होते हैं एक उद्यमी इन क्षमताओं में अवसर खोज कर नव प्रवर्तन कर सकता है हैंडिक्राफ्ट उद्योग, पर्यटन उद्योग तथा क्षेत्र विशेष की संस्कृति से संबंधित व्यवसाय में भी नव प्रवर्तन किया जाता हैं।

प्रादेशिक समस्याओं का समाधान नव प्रवर्तन द्वारा ही संभव प्रत्येक क्षेत्र की अपनी-अपनी समस्याएं होती है और इन समस्याओं के कारण उसे प्रदेश का विकास नहीं हो पता है उद्यमी उन समस्याओं को अवसर के रूप में देखकर नवाचार द्वारा उन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं जैसे कहीं परिवहन की समस्या है तो कहीं मीठे जल की समस्या है कहीं अतिवृष्टि है तो कहीं अनावृष्टि कही बारिश ज्यादा होती है कही कम उद्यमी इन स्थानीय समस्याओं में नव प्रवर्तन कर सकते हैं।

सरकारी योजना में सहभागिता करना वर्तमान में विभिन्न सरकारों द्वारा आधुनिक कल्याणकारी और लोक कल्याणकारी योजनाएं बनाई जाती है सरकार उन लोक कल्याणकारी योजनाओं में निजी उद्योगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है एक उद्यमी ऐसे अवसरों की खोज कर सरकार के साथ सहयोग या सहभागिता कर नव प्रवर्तन कर नए उद्योगों की स्थापना कर सकता है और प्रदेश के विकास में भी भूमिका निभाता है वह संयुक्त क्षेत्र के उपक्रम भी स्थापित कर सकता है और सरकार द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न अनुदानों से व्यवसाय में नवप्रवर्तन कर सकता है।

दो या दो से अधिक उद्यमी द्वारा नवप्रवर्तन उद्यमी किस अन्य उद्यमी या दो से अधिक उद्यमी आपस में मिलकर किसी नई योजना या नए विचार पर कार्य कर आपसी सहयोग से नव प्रवर्तन कर सकते हैं जिससे जोखिम बहन करने की क्षमता में कमी हो जाती है और भविष्य में होने वाली अनिश्चितता या संकट का सामना भी वे आपस में मिलकर आसानी से कर सकते हैं।

संस्था के अधिकारियों व कर्मचारियों की सहभागिता

उद्यमी नवप्रवर्तन से पूर्व अपने व्यवसाय के प्रबंधकों व कर्मचारियों से उसे नए रचनात्मक विचार से संबंधित विचार विमर्श कर सकता है और उनकी राय के अनुरूप उनकी समस्याओं का समाधान कर उन्हें नवप्रवर्तन हेतु सहयोग के लिए प्रेरित कर सकता है जिससे वह नव प्रवर्तन में अपना सहयोग दें और उसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहे।

शिक्षा में कौशल विकास व उद्यमिता प्रोत्साहन संबंधी पाठ्यक्रम संचालित करना

शिक्षा में विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर कौशल विकास और उद्यमिता प्रोत्साहन संबंधी पाठ्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को प्रेरणा मिल सके और उन्हें उद्यमिता प्रोत्साहन संबंधी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा विभिन्न सरकारी योजनाएं और वातावरण में होने वाले परिवर्तन की जानकारी देते हुए स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए साथ ही विभिन्न इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू किया जाने चाहिए जिससे नवाचार को प्रोत्साहन मिले और नए-नए उद्यमी बन जा सके।ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचारी को पुरस्कृत करना और प्रतिभा को बढ़ावा देना। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों द्वारा कई नवाचार किया जा रहे हैं जिनका शहरी लोगों को या सरकार को पता नहीं चलता है इसलिए सरकार को ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए जिससे ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले नवाचारी को प्रेरणा मिले उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिए और उसे विभिन्न प्रकार का सहयोग प्रदान कर उस प्रतिभा को बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष

उद्यमी नव प्रवर्तन द्वारा नए रोजगार, नई वस्तुएं ,नए व्यवसाय , जीवन के नए मूल्य व नए स्तर विकसित करता है उद्यमी शोध एवं अनुसंधान पर बोल देता है और समाज में नव प्रवर्तन को प्रोत्साहित करता है उद्यमी ही उद्योग में नई-नई वस्तुओं के उत्पादन नवीन उत्पादन प्रक्रिया ,नए यंत्र नए कच्चे माल नहीं तकनीक नए प्रयोग को प्रोत्साहित करता है किसी भी राष्ट्र के लिए उद्यमी नवप्रवर्तक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वह नव प्रवर्तन द्वारा व्यावसायिक जटिलताओं को कम करता है वह व्यवसाय के आकार ढांचे ,व्यूहरचना व प्रणाली में अनेक परिवर्तन लाता है वह जिसके कारण सामाजिक मूल्य सामाजिक संस्थाओं सामाजिक व्यवस्था सामाजिक संबंधों व सामाजिक समस्याओं में भी परिवर्तन होते हैं उद्यमी व्यवसाय में अनेक नवीन परिवर्तन लाता है और उनमें सुधार करके संपूर्ण समाज एवं अर्थव्यवस्था को लाभान्वित करता है वह सामाजिक नव प्रवर्तन करता है वह एक नवप्रवर्तक के रूप में और सामाजिक न्यायकर्ता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है उद्यमी वैज्ञानिक खोज का उत्पादन एवं औद्योगिक क्रियो में प्रयोग करके आर्थिक उपयोगिता एवं मूल्यों का सृजन करता है। विकसित देशों में औद्योगिक परिवर्तन उद्यमी द्वारा ही किया जाता है उद्यमी निरंतर नए परिवर्तनों, चुनौतियां, सुधारो का पूर्वावलोकन करता हुआ

एक अवसर के रूप में उनका उपयोग करता है ।वास्तव में आधुनिक युग में उद्यमी ही सामाजिक आर्थिक मूल्य का सृजन करता परिवर्तनों का संवाहक सामाजिक नव प्रवर्तक तथा औद्योगिक क्रियो का उत्प्रेरक है और उद्यमी को नव प्रवर्तन हेतु प्रोत्साहित करने के प्रयासों को व स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

साहित्य समीक्षा

1. Times of india
2. Economic Times
3. Business Line
4. The Enterpreneur – Shard Tandle
5. Entrepreneurship for everyone A student text book